मैं यहाँ हूँ

(आत्मकथा)



सुखदेव नारायण

मैं यहाँ हूँ

(आत्मकथा)



सुखदेव नारायण

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फ़रवरी, 2022

© अजय ब्रह्मात्मज

कवर फोटो : विशाल चतुर्वेदी

कवर डिजाइन : विधा सौम्या

सहयोग और प्रोत्साहन : प्रणय नारायण

जीवन-संगिनी नन्दिनी को

जिन्होंने मुझे इस मुकाम तक पहुँचाने में

अपनी अहम् भूमिका निभाई,

उनके स्नेह एवं सहयोग को

जो मेरे संबल रहे हैं

सप्रेम....

सुखदेव नारायण

अपनी परख

समकालीन साहित्य समाचार के संस्थापक पं. जगत राम आर्य के नाम साहित्य की विभिन्न विधाओं के नाम पर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए साहित्यकारों का आह्वान किया जाता रहा है. उसी के अंतर्गत एक बार **'आत्मकथा'** लिखने को कहा गया था. बात 2001 की है. मेरे मन में आया है कि मैं भी इस प्रतियोगिता में क्यों ना भाग लूँ. और अपने जीवनकाल को खण्डों में विभाजित कर लिख लिया अपनी आत्मकथा और उसका नाम रखा, 'कालखण्ड'. समय-सीमा के भीतर कालखण्ड तैयार तो हो गया और हमारे प्रकाशक डॉ० रमेश नीलकमल आ गए थे. उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया कि 'कालखण्ड' की पाण्डुलिपि उन्हें दे दूँ और वे दिल्ली जाकर उसे वहाँ जमा कर देंगे. प्रतियोगिता में मेरी आत्मकथा चुनी गई तो कोई बात नहीं. नहीं तो वे उसे छाप देंगे. मेरे मन में कई प्रकार के द्वन्द उठने लगे. उसमें प्रमुख भाव यह रहा कि साहित्य के क्षेत्र में मेरी कोई बिसात नहीं है. मुझे इस प्रतियोगिता में भाग नहीं लेना चाहिए. तब से कालखण्ड को उलटता-पुलटता रहा हूँ. उसमें कतर-ब्योंत भी हुए हैं. और कुछ जुटता गया है, तो कुछ अंश हटाये भी गए हैं. धीरे-धीरे इसका आकार-प्रकार बढ़ता गया. इसके मैटर चार खण्डों में काल के मुताबिक विभाजित हैं. यथा - **जीवन समर, सामाजिक जीवन, दायित्व तथा साधना एवं सृजन**.

प्रत्येक खण्ड में समय सीमा के अंदर लघु शीर्षक के साथ आपबीती घटनाओं का उल्लेख है. एक-दो प्रसंगों का उल्लेख ऐसा आया है, जिस पर हमारे शुभेचछु

परामर्शीजनों ने आपत्तियाँ जताई हैं. उनकी सलाह पर मुझे उसे हटा भी देना चाहिए था. संगिनी ने भी उन पंक्तियों को हटाने का आग्रह किया था. एक सुझाव आया कि कुछ मर्यादित वाक्यों में लिख दें तो भी बात बन जाती है. फिर भी पहली कलम की लिखी अपनी बातों को मेरा मन हटाने को राजी नहीं हुआ कि लेखन में ईमानदारी बनी रहे.

यद्यपि मैं रचनाधर्मिता से 1945 से जुड़ा रहा हूँ, आज जहाँ तक वरिष्ठ साहित्यकारों से हमारा सरोकार है, उनमें कुछेक से आग्रह करता रहा हूँ, मेरे व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर कुछ लिख दें, किन्तु मेरी बात नक्कारखाने में तूती की आवाज बन कर रह गई.

'विविधा' प्रकाशित होने के समय, कानों में एक बात यह आई थी कि दिल्ली में भूमिका पैसों पर बिकती है. इधर कुछ मित्रों को तो स्पष्ट मैंने कहा भी है, आप समीक्षा लिखवा दें, छपवा दें, 'मैं मुँह माँगा दूंगा'. पर अभी तक कहीं बात बनी नहीं है. जिन लोगों ने 'नाजनीन', 'विविधा' और 'समरस' की भूमिका लिखी है उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ. इन तीनों कृतियों के विमोचन के अवसर पर कवि एवं समीक्षक डॉ. वरुण कुमार तिवारी ने बीज-भाषण देने की कृपा की है. इसके लिए मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ.

1984 में प्रज्ञा सर्जनात्मक मंच की स्थापना मैंने की. मैं उसका संस्थापक/संरक्षक रहा हूँ. मैं जिंदा हूँ, तो प्रज्ञा सर्जनात्मक मंच मरा नहीं है. भले आज उसे कुछ लोगों ने

सर्जनात्मक प्रज्ञा मंच करार देकर रजिस्ट्रेशन की देहरी पर उसे कहने के लिए खड़ा कर दिया है.

अपनी पुरानी रचनाओं को जब कभी मैं उलटता-पुलटता हूँ, तो वे मुझे दमदार दीखती हैं. कहा गया है, निज कवित्त.... लेकिन मैं किसी खेमे से जुड़ा नहीं हूँ.

‘नाजनीन', 'विविधा' और 'समरस' के बाद अब यह चौथी कृति आत्मकथा '**मैं यहाँ हूँ**' आपके हाथों में देखकर प्रसन्नता हो रही है.

इस आत्मकथा में मैं अपना चित्र भी दे रहा हूँ. चित्र दो तरह के हैं, एक पारिवारिक और दूसरा कृतियों के विमोचन से जुड़ा. सालगिरह समारोह और तीर्थ स्थलों के कुछ चित्र दिए गए हैं.

मैं एक आस्थावान व्यक्ति हूँ. मुझे लगता है, कोई सत्ता है जो हमारी सृष्टि का संचालन कर रही है. हम सभी परवश हैं. उस नियन्ता की कृपा से ही अच्छा-बुरा कुछ होते रहता है. मैं गायत्री का उपासक 1986 से हूँ और हमारे गुरु आचार्य श्री राम शर्मा और माता भगवती देवी शर्मा हैं. वे दोनों ब्रह्मलीन हैं. किन्तु हमें लगता है, हमारे ऊपर दोनों का संरक्षण है. इसलिए 1986 से आज 2005 तक का मेरा जीवन एक साधक का है और आज मैं तन-मन से आपके बीच काम कर रहा हूँ. भरे-पूरे परिवार के बीच जिन्दगी मौज-आराम से चल रही है. बेटों ने 1992 में 10 बरस की जिन्दगी मेरी आँकी थी. उसे 2002 में मैंने पूरा कर लिया. उसी बीच 1999 में धर्मपत्नी ने मेरे

पचहत्तरवें सालगिरह पर दस बरस की जिन्दगी से नवाजा था, जिसकी गिनती 2003 से चल रही है. संगिनी की शुभकामना और गुरु का संरक्षण और नियन्ता का वरदहस्त बना रहा, तो शेष अन्य विधाओं में भी कृतियाँ मैं साहित्य जगत को देता रहूँगा. यह मेरा दम्भ नहीं आत्मविश्वास है.

हमारे प्रकाशक डॉ. रमेश नीलकमल हैं. वह मुझे बड़ा भाई मानते हैं. मेरी कृतियाँ 'विविधा' और 'समरस' उन्होंने ही छापी थीं. **'मैं यहाँ हूँ'** (आत्मकथा) के प्रकाशन का भार भी उन्हें ही दे रहा हूँ.

आवरण पृष्ठ में मेरा रेखाचित्र है. वह मेरी पोती विधा सौम्या ने बनाया है. 'नंद' कम्प्यूटर, वीरपुर के युवा, उत्साही विद्यानंद ने धैर्य के साथ इसे कंपोज किया. इसके लिए उन्हें धन्यवाद देता हूँ.

मुझे माँ-बाप का भरपूर प्यार-दुलार मिला. माँ को इया कहता था. मेरी मातृभाषा भोजपुरी है. इया पढ़ी-लिखी नहीं थी. कैथी लिपि में चिट्ठी लिखती थीं. घर में भोजपुरी बोली जाती थी. उनसे मुझे त्याग की भावना मिली और पिता से कर्मठता और धैर्य से जीने की जिजीविषा. गत वर्ष 2004 में **'चन्द्रकुन्ता स्मृति न्यास'** की स्थापना कर कुछ लोगों को नवाजा था. इस वर्ष भी उसके तहत ही सांस्कृतिक और रचनात्मक कार्य कर रहा हूँ.